छत्तीसगढ़ की राजनीति में महिलाओं का योगदान

बिनोद कुमार साहू *

शोध सारांश – लोकतंत्र अब तक के मानव इतिहास में सर्वश्रेष्ठ शासन प्रणाली है। लोकतांत्रिक व्यवस्था को सफल बनाने हेतु सभी वर्ग एवं समुदायों का समान रूप से भागीदारी आवश्यक है। स्त्री–पुरूष समाज रूपी गाड़ी के दो पहिये है, अत: समाज को अग्रसर करने एवं सफल बनाने में दोनों की समान रूप से भागीदारी सुनिश्चित होना चाहिए। छत्तीसगढ़ प्रदेश के रूप में अपने विकास यात्रा के डेढ़ दशक पूर्ण कर चुका है। अपने विकास यात्रा की अल्पावधि में विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय सफलता हासिल की है। छत्तीसगढ़ के विकास एवं समृद्धि में महिलाएं विविध क्षेत्रों में सक्रिय भूमिका निभा रहीं है। जहां एक ओर प्रदेश में महिला साक्षरता में सुधार हो रहा है तथा सामाजिक क्षेत्र में जागरूक हुई है, एवं आर्थिक रूप से स्वाललंबी एवं रोजगार की ओर उन्मुख हो रही है, वही राजनीतिक क्षेत्र में इनकी सहभागिता और सक्रियता में वृद्धि हुई है। 73 वॉ एवं 74 वॉ संविधान संशोधन विधेयक संसद में पारित होने के पश्चात् प्रदेश के ग्रामीण शासन एवं नगरीय निकायों में इनकी संख्या में पर्याप्त वृद्धि हुई है। स्थानीय संस्थाओं में विभिन्न पदो में अपनी योग्यता, निर्णय क्षमता एवं नेतृत्व का लोहा मनवा चुकी है। छत्तीसगढ़ त्रि–स्तरीय पंचायत निर्वाचन 2015 के विभिन्न पदो में 50 प्रतिशत से अधिक महिलाएं निर्वाचित हुई है। किन्तु संसद एवं विधानसभा में छत्तीसगढ़ की महिलाओं का प्रतिशत उनकी जनसंख्या के अनुपात में अत्यंत कम है। जिस प्रकार संसद विधानमंडलों में महिलाओं का अनुपात कम है, उसी प्रकार नवोदित राज्य छत्तीसगढ़ का है। अत: प्रदेश की शीर्ष नीतिनिर्माणक राजनीतिक संस्था अर्थात विधानसभा में महिलाओं का प्रतिनिधित्व आबादी के अनुरूप हो।

प्रस्तावना – जिस प्रकार भारतीय संस्कृति में नारी को महान शक्ति के रूप में सदैव आदर एवं सम्मान प्राप्त होता रहा है, उसी प्रकार छत्तीसगढ़ में सामाजिक, धार्मिक एवं आध्यात्मिक कार्यो में महिलाएं पुरूषों के सहभागी, अर्धागंनी बनकर महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। किन्तु यह भी सर्वविदित है कि भारतीय इतिहास में महिलाओं की स्थिति समय, काल परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तन हुआ है, अत: वैदिककालीन समाज में महिलाओं को प्राप्त स्वतंत्रता और समानता कालान्तर में वे पुरूष प्रधान समाज में शोषित और दोयम दर्जे बनकर रह गयी। अत: छत्तीसगढ़ की महिलाओं की स्थिति को भारतीय इतिहास के संदर्भ में समझने की आवश्यकता है। छत्तीसगढ़ के इतिहास के विभिन्न कालखंडो में नारी विभूतियों ने अपने कार्यो से नारी समाज को गौरान्वित किया है। रामायण काल में मर्यादा पुरूषोत्तम राम की माता कौशल्या दक्षिण–कोशल की राजकुमारी थी। छत्तीसगढ़ लोक गाथाओं में फुलकुॅवर, अहिमन रानी, रेवा रानी प्रमुख नारी पात्र है। माता अमरौतिन, माता सफुराबाई, मिनीमाता, दयावती, नगरमाता बिल्हीबाई, राजमोहिनी देवी, पद्मश्री तीजनबाई, पद्मश्री फुलबासन आदि ने विविध क्षेत्रों में सक्रिय भूमिका निभा कर महिला समाज के लिए अनुकरणीय उदाहरण एवं छत्तीसगढ़ के लिए प्रेरणास्त्रोत बनी।

छत्तीसगढ़ 01 नवम्बर सन् 2000 को भारतीय संघ का 26 वॉ राज्य बना। नि:संदेह छत्तीसगढ़ की महिलाए आज विविध क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। स्वतंत्रता के पश्चात् महिला शिक्षा को बढ़ावा मिलने से छत्तीसगढ़ की महिलाओं की व्यावसायिक गतिविधियों में वृद्धि हुई है। किन्तु राजनीतिक सहभागिता अभी भी जनसंख्या के अनुरूप नहीं है। संसद और विधानसभा में छत्तीसगढ़ की महिलाओं की उपस्थिति उनकी जनसंख्या के अनुरूप नही है। महिलाओं को विकास की मुख्यधारा से जोड़े बिना किसी समाज का सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक विकास की कल्पना संभव नहीं है।

लोकसभा में छत्तीसगढ़ की महिलाओं का प्रतिनिधित्व – भारत में प्रथम आम चुनाव सन् 1951–52 में हुआ था। स्वतंत्रता के पश्चात् अब तक 16 आम चुनाव सम्पन्न हो चुके है। लोकसभा निर्वाचन में छत्तीसगढ़ की महिलाओं का प्रतिनिधित्व अत्यंत कम है। श्रीमती मीनाक्षी देवी, मिनीमाता (1952,1957,1962,1967 एवं 1971) सर्वाधिक पॉच बार निर्वाचित हुई थी। श्रीमती केशर देवी (1962), श्रीमती रजनीगंधा (1967), श्रीमती पद्मावती (1967), श्रीमती पुष्पादेवी सिंह (1980), श्रीमती छबिला देवी नेताम (1996), श्रीमती करूणा शुक्ला (2004), सुश्री सरोज पाण्डेय (2009) एवं श्रीमती कमला देवी पाटले (2009 एवं 2014) में लोकसभा सदस्य निर्वाचित हुई। इस प्रकार स्पष्ट है कि अब तक प्रदेश में मात्र 09 महिलाओं ने 16 बार लोकसभा में निर्वाचित हुई। उसी प्रकार उच्च सदन राज्यसभा में छत्तीसगढ़ से श्रीमती वीणा वर्मा (1988), श्रीमती कमला मनहर (2004), श्रीमती मोहसिना किदवई (2004–10 एवं 2010–16) एवं श्रीमती छाया वर्मा (2016–22) महिला प्रतिनिधि राज्यसभा सदस्य निर्वाचित हुई। श्रीमती इग्रीड मैक्लाउड लोकसभा में इंग्लो इंडियन समुदाय की ओर से नामित सदस्य थी।

लोकसभा में छत्तीसगढ़ की महिलाएं– (देखे आगे पृष्ठ पर)

छत्तीसगढ़ विधानसभा में महिलाओं का प्रतिनिधित्व – छत्तीसगढ़ का प्रदेश के रूप में अस्तित्व 01 नवम्बर 2000 को हुआ। पुनर्गठन के पश्चात् छत्तीसगढ़ विधानसभा सदस्यों की संख्या 90 है। छत्तीसगढ़ राज्य के प्रथम विधानसभा (मध्यप्रदेश विधानसभा निर्वाचन– 1998 के अनुसार) में महिला विधायकों की संख्या मात्र 05 थी। राज्य के प्रथम मंत्री परिषद् में

* सहायक प्राध्यापक (राजनीति शास्त्र) शासकीय महाविद्यालय, धरमजयगढ़, जिला – रायगढ़ (छ.ग.) भारत

श्रीमती गीता देवी सिंह एकमात्र महिला थी। उल्लेखनीय है कि स्वतंत्रता के पश्चात् 01 नवम्बर 1956 को विंध्य, बुंदेलखंड, छत्तीसगढ़ महाकौशल एवं मध्यभारत को समाहित करके मध्यप्रदेश का गठन किया गया था। मध्यप्रदेश विधानसभा में छत्तीसगढ़ से श्रीमती इंदू सिंह, श्रीमती कमला देवी सिंह, श्रीमती गंगा पोटाई, श्रीमती पद्मादेवी सिंह, श्रीमती रश्मि सिंह, श्रीमती गीता देवी सिंह, श्रीमती करूणा शुक्ला आदि महिला विधायक रही। नवोदित राज्य में अब तक हुए विधानसभा निर्वाचन में 15 प्रतिशत से अधिक महिला विधायक नहीं निर्वाचित हुई है।

छत्तीसगढ़ विधानसभा में महिलाओं की भागीदारी- (देखे अन्तिम पृष्ठ पर)

पंचायती राज व्यवस्था में छत्तीसगढ़ की महिलाओं का प्रतिनिधित्व – यद्यपि राष्ट्रीय एवं राज्य राजनीति में छत्तीसगढ़ की महिलाओं की भागीदारी उनकी जनसंख्या के अनुरूप सुनिश्चित नहीं हो पाई है। वही छत्तीसगढ़ की राजनीति का एक सकारात्मक पक्ष यह भी है कि स्थानीय संस्थाओं (पंचायत एवं नगरीय निकायों) को संवैधानिक दर्जा मिलने के बाद त्रि-स्तरीय स्थानीय संस्थाओं एवं निकायों के निर्वाचनो में महिला प्रतिनिधियों की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। 73 वाँ संविधान संशोधन अधिनियम 1992 में एक तिहाई पद तथा 110 वाँ संविधान संशोधन अधिनियम-2009 के द्वारा पंचायती राज संस्थाओं में 50 प्रतिशतपद महिलाओं के लिए आरक्षित किया गया है। इसके परिणाम- स्वरूप प्रदेश में महिला पंचायत प्रतिनिधियों की संख्या में वृद्धि हो रही है। आरक्षित पदो के अलावा सामान्य सीटों से भी महिलाएं निर्वाचित हो रही है जो महिला सशक्तीकरण एवं राजनीतिक सहभागिता के नये युग की शुरूआत के साथ-साथ भविष्य में आधी आबादी की भागीदारी उनकी जनसंख्या के अनुरूप सुनिश्चित होने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

छत्तीसगढ़ पंचायत निर्वाचन- 2010 में महिलाओं का प्रतिनिधित्व(सारणी देखे)

छत्तीसगढ़ पंचायत निर्वाचन- 2015 में महिलाओं का भागीदारी(सारणी देखे)

छत्तीसगढ़ के जिला पंचायत अध्यक्षों में महिलाओं की भागीदारी(सारणी देखे)

निष्कर्ष – इस प्रकार स्पष्ट है कि समृद्ध एवं सशक्त समाज एवं समग्र विकास हेतु स्त्री- पुरूष दोनों की समान रूप से भागीदारी सुनिष्चित हो। प्रदेश में महिला आबादी के अनुरूप संसद और विधानसभा में प्रतिनिधित्व नहीं मिल पाई है। प्रदेश के रूप में अस्तित्व में आने के पश्चात् छत्तीसगढ़ के कुल 11 लोकसभा सीट में से किसी भी आम-चुनाव में 02 से अधिक महिला सांसद निर्वाचित नहीं हुई है। तथा कुल 90 विधानसभा क्षेत्र में 15 प्रतिशत से अधिक महिला विधायक निर्वाचित नहीं हुई है। वही पंचायती राज व्यवस्था लागू होने के पश्चात् वर्तमान में 50 प्रतिशत से अधिक महिलाएं निर्वाचित हो रही है। इतनी बड़ी संख्या में प्रदेश की पंचायतों में महिलाओं की संख्या में हो रही वृद्धि ने पंचायती राज व्यवस्था एवं महिला आरक्षण की सार्थकता को सिद्ध कर रहा है तथा यह महिला सशक्तीकरण एवं भविष्य में आधी आबादी की भागीदारी उनकी जनसंख्या के अनुरूप सुनिश्चित होने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। अत: आवश्यकता है कि वर्षो से प्रतिक्षारत् महिला आरक्षण (संसद और विधानमंडलों में एक तिहाई महिला आरक्षण) को मूर्त रूप देकर देश और प्रदेश की आधी आबादी को लोकतांत्रिक व्यवस्था एवं नीति और निर्णय निर्माण में सच्चे अर्थो में भागीदारी बनाने की दिशा में यह महत्वपूर्ण और सार्थक कदम होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. फड़िया बी.एल. एवं जैन पुखराज: भारतीय शासन एवं राजनीति, साहित्य भवन प्रकाशन, आगरा
2. गुप्ता, कमलेश कुमार (2005) भारतीय महिलाएं- शोषण, उत्पीड़न एवं अधिकार, बुक इन्क्लेव, जयपुर
3. सिंह सीमा (2010) पंचायतीराज और महिला सशक्तिकरण, प्रभात प्रकाषन, नई दिल्ली प्रथम संस्करण
4. बंदोपाध्याय डी. एवं मुखर्जी अमिताभ (2007) महिला पंचायत सदस्यों का सशक्तिकरण, राज पब्लिकेशन, नई दिल्ली
5. डॉ. नारायण इकबाल, भारतीय शासन एवं नगरीय जीवन, शिवलाल अग्रवाल एंड कम्पनी, आगरा
6. प्रतिवेदन छत्तीसगढ़ राज्य निर्वाचन आयोग रायपुर का पंचायत परिणाम
7. योजना (मासिक) , नई दिल्ली
8. कुरूक्षेत्र (मासिक), नई दिल्ली

लोकसभा में छत्तीसगढ़ की महिलाएं

लोकसभा	वर्ष	निर्वाचन क्षेत्र	निर्वाचित महिला प्रतिनिधि	प्रतिशत
13 वीं	1999-2004	11	01	9.09
14 वीं	2004-2009	11	02	18.18
15 वीं	2009-2014	11	01	9.09
16 वीं	2014-2019	11	01	9.09

छत्तीसगढ़ विधानसभा में महिलाओं की भागीदारी

लोकसभा	वर्ष	निर्वाचन क्षेत्र	निर्वाचित महिला प्रतिनिधि	प्रतिशत
प्रथम	2000-2003	90	05	5.5
द्वितीय	2003-2008	90	06	6.6
तृतीय	2008-2013	90	13	14.44
चतुर्थ	2013-2018	90	10	11.11

छत्तीसगढ़ पंचायत निर्वाचन– 2010 में महिलाओं का प्रतिनिधित्व

वार्ड पंच		सरपंच		जनपद पंचायत सदस्य		जिला पंचायत सदस्य	
कुल	महिला	कुल	महिला	कुल	महिला	कुल	महिला
145790	79663	9724	5116	2783	1569	321	190

छत्तीसगढ़ पंचायत निर्वाचन– 2015 में महिलाओं का भागीदारी

वार्ड पंच		सरपंच		जनपद पंचायत सदस्य		जिला पंचायत सदस्य	
कुल	महिला	कुल	महिला	कुल	महिला	कुल	महिला
155939	86008	10971	5561	2973	1595	402	223

छत्तीसगढ़ के जिला पंचायत अध्यक्षों में महिलाओं की भागीदारी

2005		2010		2015	
कुल	महिला	कुल	महिला	कुल	महिला
16	06	18	09	27	17

****